पोवारी बाल ई मासिक

झुंझुरका

मार्च 2023

साल- २ रो , अंक २२वो

पोवारी बाल बाचक चळवळ प्रस्तुत

संपादकीय.......

बाल दोस्तहो,

वर्तमान समयमा काम धंदा, नोकरीको कारण आपल् शेजारबेठार, गावमाका, घरमाका, मामा- मामी, काका-काकू असा बहुतजन दूर शहरमा रव्हसेत. असो दुसरो क्षेत्रमा जादा समयवरी रहेलक अलग संस्कृती, अलग बोलीभाषाको प्रभावमा आयस्यान आपली संस्कृती, आपली बोली बिसरनकी शक्यता निर्माण होसे. दुसर् संस्कृतीमा रवनो, दुसरी भाषा सिकनो अजकी जरूरत बन गयी से. पर येको मतलब येव नही होय का आपली संस्कृती अना बोलीला भूल जाव.

आपण घरपासून केतरोकबी दूर रहया, तरी वहान आपली संस्कृती, आपली बोली आपलोपणको अनुभव देसे. आपली पोवारी संस्कृती महान संस्कृतीको एक भाग आय. असो महान संस्कृतीका तुमी भविष्यका वाहक आव. एक पिढीकनलक दुसरो पिढीकन संस्कृतीको वहन होसे. येनच माध्यमलक आपली संस्कृती अना आपली पोवारी बोली अजवरी एक पिढीकनलक दुसर् पिढिला हस्तांतरीत भयी से.

दुसरो संस्कृतीमा आपलोपणको भाव, आपला संस्कार, आपली बोली नही मिल सिक्. मुहून आपलो संस्कृतीला टिकावनो आपली जिम्मेदारी बनजासे. पोवारी संस्कृतीको एक महत्वपूर्ण आंग मंजे आपली पोवारी बोली आय. येको बोलचालमा, लिखनोमा वापर करस्यान तुमी पोवारी संस्कृतीका वाहक बन सिक् सेव......त् चलो मंग बोलबी पोवारी....बाचबी पोवारी अना लिखबी पोवारी!

- गुलाब बिसेन

संपादक - झुंझुरका पोवारी बाल ई मासिक

मो. नं. 9404235191

संपादक मंडल

श्री गुलाब बिसेन, संपादक

श्री रणदीप बिसने, उपसंपादक

श्री महेंद्रकुमार पटले, उपसंपादक

श्री महेंद्र रहांगडाले, उपसंपादक

श्री उमेन्द्र बिसेन, उपसंपादक

निर्मिती

महेंद्र रहांगडाले

🌷🌷*भीम गर्व हरण* 🌷🌷

एक घन की बात आय। महाबली भीमला द्रोपदी न कहिस, स्वामी तूमला मोला खुश देखनो से त मोला ब्रहम कमल आन देव। भीम कसे बस येतरी सी बात । तोला खुश देखंनसाती मी काहिच कर सिकुसू। भिमला आपलो शक्ति पर घमंड भयेव, ना भीम ब्रहम कमल साती निकलेव।

भीम चलेव भय्या वन मा लक,,,, जहा कावरा काव नहीं कर,,,, चिमनी चिव नहीं कर,,,, कर्क की रांझ पडीसेत,,, सरप की बेठरी पड़ी सेत असो वन मा लक भीम हिमालय को कोऱ्यामा पोहचेव। फूल को तरा बीस हात दुरच होतो, तब भीम न देखिस की ओको रस्ता मा एक बंदर आपली पुसटी आडवी टाककर सोय रही से। कोनीला ओरांडकर जानो ऑन जमानों मा पाप मानेव जात होतो। भीम जलदी मा होतो पर बंदरला ओरांडकर सामने भी जाय सकत नोहोतो। भीम न गुस्सा लक बुडगो बंदरला कहीस की रस्तापर लक आपली पुसटी काहाड लेव।

वृद्ध बंदर को रूपमा सोया हनुमान जी न कहिन ," मी बुड़गो सेव, मोरो मा येतरी ताकद नाहाय की मी पूसटी उचलून, मून तुमिच उचलकन एक कड पर ठेय देव, अना चली जाव।

उत्तर आयेककर भीम की तरपाय की आग मस्तक मा गई । पर पुसटी उचलेबिना सामने भी जाय सिकत नोहोतो। मुन उनं आपली गदा ठेईन ना दुहि हात लक पुसटी उचलन बस्या पर वा काही उचलत नोहती। भीम घामचरचरो भयेव्। बहुत थक गयेव, दस हजार हत्ती को ताकद वालो भीम लहानसी पुसटि नहीं उचल सकेव बोन बंदरल निवेदन करीस की वय आपलो परिचय सांगेत।

निवेदन आयेक कर हनुमानजी दिव्य रूप मा आया। तब भीम नतमस्तक होयकर चरनों मा पडेव, डोरमा लक पश्र्चाताप का आंसू बोहन बस्या ।

,,,,," भीम ! तोला घमण्ड भय गयेतो कि तोरो दुन दुनिया मा शक्तिशाली कोणी नहाय । घमण्ड करनो साजरी बात नहाय भीमला पश्चाताप भयेव ।

बोध: घमंड मा मनुष्य कोनीको भलो त नहीं कर सीक।सिर्फ कोनीला बिना कामको परेशान कर सीक से।

✍✍✍सौ.छाया सुरेंद्र पारधी

नहानपनको खेल - कवलकी बंडी

-श्री गुलाब बिसेन

नहानपन येव जिवणको सबमा सुनहरो काल. खेलो, कुदो, मस्ती करो येकंमा दिवस कसो सरजासे पताच नही चलं. सुट्टिक् रोज दिवसभर खेल बिगर काही नही सूच् येन् उमरमा. घरमाक् टुरूपोटुनको खेल देखस्यान सबलाच आपल् आपल् बचपनकी याद आवसे. आबक् टुरूपोटुनका खेल अना वूनका खिलोना अलग सेती. वर्तमान कालमा बजारमा येकदून एक खिलोनाईनकी रेलचेल चोवसे. नहान मोठा, रंगना रंगका खिलोना टूरूपोटुयीनला ललचावसेत अना मंग मायबाप खिलोना लेयबी देसेत.

आमर् नहानपनमा झाककर देखीसत् दुकानपरक् खिलोनाइनको वू जमानो नोयतो. कवलकी बंडी बनावनो, मातीका चाक बनावनो, लाकूळको भोवरा खेलनो, गाडुर्ली फिरावनो, सायकलको चक्का फिरावनो, कुचकाळी खेलनो, झाळपरा "डाबी" को खेल खेलन् असा आमरा खेल. येन् खेलईनसाती लगनेवालो सामान घरमाच मिल्. कबी कबी भोवरासारखो खिलोना खातीकनलक बनावनो पळ्. नहीत् सब हँडमेड खिलोना रवत आमरा.

येन् सब खेलको मजा अलग अलग रव्. मोरो पसंदीदा खेल होतो कवलक् बंडीको. येन् बंडीका बेरूका बैल आमीच बनावजं. बंडीका चाक आमी मातीका बनावज्. येन् चाक बनावनकी प्रक्रियाबी बळी मजेदार होती. बंडीक् चाकसाती आमी सब संगीभाई एकरोज पटीलक् गावखारीकी माती आनज्. मंग् वा

माती फिजायस्यान वोका चाक बनावज्. चाक दुय तीन तपनी वारायस्यान होतवरी आमी कामथमा सेरी चरावता चरावता सेनी बेचज्.

दुय तीन तपन खनखना वाऱ्या चाकईनकी सेनक् सेनीमा भट्टी लगावज्. मंग भट्टीमाका पक्या चाक बंडीला लगावज्. या बंडी आमरा तपनबेरा बाळीमाक् झाळखाल्या खेलनला मज्या आव्. तपन उतरेपर आमी या बंडी धरस्यान बाळीमाक् कांदा लसूनक् वाफामा खेलज्. वाफाक् पारला खांड पाळस्यान एक वाफामालक दुसर् वाफामा बंडी कुदावनोमा मोठी मज्या आव्.

येव कवलक् बंडीको खेल बिन पैसाको होतो. खेळापाळाक् टुरूनको उनारोको येव मुख्य खेल आता बहुत कम खेलेव जासे. येव गावठी खेल आता गाव खेळामाबी बहुत कम चोवसे. ये खेल ग्रामिण संस्कृतीका अस्सल खेल आती. इनको जतन होये पायेजे......तं चलो मंग.....घरकं टुरूपोटुनला कवलकी बंडी बनावनला सिखावो अना टुरूपोटुयीनसंग् येनं खेलको मज्या लेव.

******

अलक

स्वीटी को शाळा मा सहल जान की होती, गुरुजींन सबला सहल की फीस साती तीन सौ रुपया आनण ला सांगीन. सब टूरटूरी बोहुत खुश होता पर अलका को चेहरा पर खुशी नोवती, स्विटी को ख्याल मा या बात आयी, वोन अलका ला कारण बिचारिस त् बाबूजी आई जवर पैसे नही रहेव को कारण लक् मी सहल मा नयी आय सकू मुहून सांगिस. घर आयेव पर बाबूजी ला कवण लगी, "बाबूजी तुमी मोला कपडा लेय देन का होतात त् आता नोको लेय देवो, वय पैसा अलका को सहल की फीस मुहून देय देवो." बाबूजीईंन स्विटी ला गर्व लक् जवर पकडीन ना कवन बस्या,"बेटा अलका की सहल की फीस बी भरबिन अना तोरो साती कपडा बी लेबीन."

श्री महेंद्र रहांगडाले, मच्छेरा

राजकुमार

काय लाई रूठ गयो,

मोरो यव राजकुमार।

जरासो मुस्कराय दे,

करबीन तोला दुलार।।

कोयर की कुहू कुहू,

सुनकन हासी आई।

मोरो राजकुवार को,

मन ला लगित भाई।।

बंदरा कूद रही सेती,

कररही सेत हूप हूप।

देखकन ख़ुशी भई,

निखरयो वोको रूप।।

सुन चिड़िया की चहक,

मन मा आनंद आयो।

पक्षी जसो उड़न लाई,

मन ओको ललचायो।।

नहान सो मन मा,

सेती मोठा सपन।

कसो रस्ता रोके,

दुफारी की तपन।।

प्रकृति को कोरा मा,

सेती ख़ुशी का उपहार।

खुश भयो राजकुमार,

पायकन मोठो दुलार।।

✍️श्री ऋषि बिसेन, बालाघाट

सखी मोरी बचपन की

पल्या बढ्या साथ साथमा

खेल्या कुदया एक संगमा

सें याद मोला हरेक क्षण की

तू सखी,तू सखी मोरी बचपन की

ज्या बात रवंसें मोरो मनमा

वाच बात तोरो बोली बचनमा

संग संग चलंस जसी धडकन सी

तू सखी,तू सखी मोरी बचपन की

कभी चिडनो तं कभी रूसनो

बात बातपर मोरो संग लडनो

नटखट स्वभाव थोडी सनकी

तू सखी,तू सखी मोरी बचपन की

तू मनकी सच्ची,सच्चो तोरो जिगर

दोस्तीमा नव्हती रवत जगकी फिकर

सहेली तू मोरो सुख दुःखंईन की

तू सखी,तू सखी मोरी बचपन की

जोडी तोरीमोरी होती बडी प्यारी

सबसें अनोखी अद्भुत ना न्यारी

दोस्ती आपली बनी मिसाल जगकी

तू सखी,तू सखी मोरी बचपन की

का भयेव कसूर नही मोलाभी खबर

दोस्तीला लग गई जमानो की नजर

बिना जाने छोड गईस तू गुमसुमसी

तू सखी,तू सखी मोरी बचपन की

सांग कशी भुलाऊ मी वू दोस्तांना

बचपनको तोरो मोरो मासुमपणा

यादमा बोहसें झडी असुबन की

तू सखी,तू सखी मोरी बचपन की

सौ शारदा चौधरी भंडारा

पसंद बालजगत की

बागबगीचा सुंदर

देख तृप्त होसे मन

फुल का झाड झडुला

लगसेती मधुबन.

बाल मनला रंजक

फुल को लगं बगिचा

होसे मनोमन ओकी

फुल तोडन की इच्छा.

मन से टुरांइनको

जसो चंचल भंवरा

घड़ी भर खेल कूद

क्षणभर मा नखरा.

बालजग की पसंद

खेल कूद को मैदान

खेलनला मिलेव का

भुल जासे खानपान.

बाग,बगिचा,मैदान

सेत केंद्र आनंद का

शारीरिक,मानसिक

अन अच्छो सेहत का.

====================

उमेंद्र युवराज बिसेन (प्रेरित)

गोंदिया (श्रीक्षेत्र देहू पुणे)

रिसता

जनमताच बनसेत

नवा नवा रिसता

कोणला का कसेत

आयकोना आता ||१||

मायको मायला

कवसेत माममाय

अजी की माय

होसे शायनीमाय ||२||

मायको भाई

पिरमको मामा

लोरीमा देखाव्

माय चंदामामा ||३||

अजीको नहान भाऊ

रिसतोमा काका

मोठो भाऊला कवनं

बडोजीच बाका ||४||

मायकी बहीण

नहान, मोठी मावसी

अजीकी शायनी माय

आजीमाय जसी ||५||

अजीकी बहीण

होय जासे फुपा

भजो भजी पर वोकी

रवसे किरपा ||६||

काकाकी बायको

सोभसे काकी

बडीमाय बडोजीको

घरला राखी ||७||

सौ कटरे "राम-कमल "

गोंदिया

तुमला माहीत से का?

संकलक- श्री महेंद्र रहांगडाले

मोहू को झाड आपलो क्षेत्र मा भरपूर प्रमाण मा दिस सेत, मोहू को झाड का फायदा देखक्यान वोला कल्पवृक्ष कवनो मी बी कमी नाहाय. मोहू को झाड की माहिती न फायदा खाल्या देया सेत.

- *मधुक गोत्र मा को झाड
- *हिंदी नाव: महुआ, इंग्रजी नाव: Butter Tree, शास्त्रीय नाव: Madhuka Indica
- *कास्तकार ला जोडधंदा मुहून आर्थिक फायदा
- डेरेदार अना दीर्घ आयुषी झाड
- *फेब्रुवारी – मार्च को बिचमा पान झड सेत
- *मोहफुल लक विविध प्रकार की औषध,खाद्यपदार्थ,राब,जॅम,जेली,लाड्डू, चॉकलेट बनायेव जासे
- *टोरी(फल) को तेल कहाडक्यान सयपाक, टवरी मा उपयोग कर सेत
- *मोहू को साल लक् रंग बनाव सेत
- *मोहू को पान की पत्राली बनावं सेत
- *मोहू को लाकूड पासून फर्निचर बनावं सेत

परीक्षा

आयी आयी परीक्षा,धक धक वा सुटी /

आता अभ्यासला नोको मारो ना बुटी //धृ//

टी. व्हीं मोबाईलको आता सोळो नाद /

नोको करो इतउत गाव जानकी साद //

अभ्यास संग नोको करो गा ताटा तुटी/

आता अभ्यासला नोको मारो ना बुटी //१//

तनमन लक अभ्यास करो एकाग्र चित्त /

ध्यान मंग लगजाये ना घबरान की बात //

एक एक शब्द को ध्यान नोको रेटारेटी /

आता अभ्यासला नोको मारो ना बुटी //२//

विषयवार अभ्यास ना नोको घालमेल /

सबजन पास ,कोणी नहीं होनका फेल //

ना करो कापी ना पेपर की, फाटा फुटी /

आता अभ्यासला नोको मारो ना बुटी //३//

धीरज मनमा ठेवो ना खुदपर बिश्वास /

समय को ध्यान,ना बने गरोकी फास //

मा गडकाली को ध्यान,बात भी पटी /

आता अभ्यासला नोको मारो ना बुटी //४//

श्री डी पी रहांगडाले, गोंदिया

जादुई जूता

मोरो जूता से जादूई,

टाककर नाचू थुई थुई,

पहुॅंच जासू हर जागापर,

आकाश रव्ह या भुई

जूता टाककर फिता बांध

होय जासू मी रफू चक्कर,

भलो भलो पहलवान इनला

देसू मी एकटो टक्कर.

जूता टाककर मी उडाय

जासू पलभरमा आकाशमा,

बादरपर बसकर सैर करूसु

कही बी अंधारो या प्रकाशमा.

जूता टाककर कभी कभी

होय जासू मी पूरो गायब,

धूंड नही सकत मोला तब

पुलीसवाला ना मोठा साहयब.

जूता मोरा सेती जादू का

सबदून मस्त,चांगला,सुंदर,

कमाल अशी देखाऊसु मी

हार जाहे मोरल् जादूगर.

श्री चिरंजीव बिसेन

गोंदिया

रंग भरो

बोलो पोवारी

बाचो पोवारी

लिखो पोवारी